विषय कोड :
Subject Code : **106/125/206/224/306/331**

CLASS-XII QUARTERLY EXAMINATION, JUNE - 2025

कक्षा-XII त्रैमासिक परीक्षा, जून - 2025

HINDI (COMPULSORY)

हिन्दी (अनिवार्य)

I.Sc., I.Com. & I.A.

कुल प्रश्न : 70 + 6 = 76 | कुल मुद्रित पृष्ठ : 20

Total Questions : 70 + 6 = 76 | **Total Printed Pages : 20**

(समय : 3 घंटे) | (पूर्णांक : 80)

[Time : 3 Hours] | [Full Marks : 80]

CLASS XII bsebcareer.com

---

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखें :

(i) खेल का महत्त्व

मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए खेल अत्यंत आवश्यक हैं। खेल शरीर को स्वस्थ, फुर्तीला और सक्रिय बनाए रखते हैं। शारीरिक व्यायाम का सबसे सरल और रोचक तरीका खेल ही है। खेलों से अनुशासन, समय-पालन, सहयोग और प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है। विद्यार्थियों के लिए तो खेल और भी आवश्यक हैं क्योंकि "स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।" आज विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं ने खेलों को एक उज्ज्वल करियर का माध्यम भी बना दिया है। क्रिकेट, बैडमिंटन, हॉकी, फुटबॉल, कबड्डी आदि खेलों में भारत ने विश्व स्तर पर नाम कमाया है। हमें जीवन में खेल भावना को अपनाना चाहिए और खेल को मनोरंजन तथा स्वास्थ्यवर्धन का माध्यम बनाना चाहिए।

(ii) विद्यार्थी और अनुशासन

अनुशासन जीवन की रीढ़ है, विशेष रूप से विद्यार्थी जीवन में इसका विशेष महत्त्व होता है। विद्यार्थी काल सीखने, समझने और जीवन के आधार निर्माण का समय होता है। इस समय यदि विद्यार्थी अनुशासन का पालन नहीं

करेगा, तो उसका जीवन दिशाहीन हो जाएगा। अनुशासन से ही व्यक्ति में समय-पालन, जिम्मेदारी और आत्म-नियंत्रण की भावना आती है। विद्यालय में समय पर पहुँचना, शिक्षकों का सम्मान करना, नियमों का पालन करना - ये सब अनुशासन के अंग हैं। जो विद्यार्थी अनुशासित होता है, वही जीवन में सफलता प्राप्त करता है। इसलिए हर विद्यार्थी को अनुशासन को अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए।

(iii) दहेज-प्रथा

दहेज-प्रथा भारतीय समाज की एक गम्भीर सामाजिक बुराई है। यह प्रथा विवाह के समय वधू पक्ष से वर पक्ष को धन, वस्त्र, गहने, वाहन आदि देने की प्रथा है। पहले यह स्वेच्छा से होता था, पर अब यह एक मजबूरी और बोझ बन गई है। दहेज के कारण गरीब माता-पिता अपनी बेटियों की शादी नहीं कर पाते, कभी-कभी उन्हें आत्महत्या तक करनी पड़ती है। कई बार दहेज न मिलने पर बहुओं को तंग किया जाता है या उनकी हत्या तक कर दी जाती है। सरकार ने दहेज प्रथा को रोकने के लिए कड़े कानून बनाए हैं, परंतु जब तक समाज में जागरूकता नहीं आएगी, तब तक इस कुप्रथा का अंत नहीं होगा। हमें मिलकर इस बुराई को जड़ से समाप्त करना होगा।

(iv) स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त 1947 को भारत अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ। यह दिन हमारे देश के लिए गौरव और सम्मान का प्रतीक है। स्वतंत्रता दिवस हर वर्ष पूरे देश में बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। इस दिन सभी सरकारी कार्यालयों, विद्यालयों और संस्थानों में तिरंगा फहराया जाता है और देशभक्ति गीत गाए जाते हैं। स्वतंत्रता सेनानियों को याद कर उनके बलिदान को श्रद्धांजलि दी जाती है। लाल किले से प्रधानमंत्री का भाषण पूरे देश को एक सूत्र में बाँधता है। यह दिन हमें हमारे कर्तव्यों की याद दिलाता है और देश के लिए कुछ करने की प्रेरणा देता है। हमें अपने देश की आज़ादी की रक्षा करनी चाहिए और इसे और महान बनाने का संकल्प लेना चाहिए।

---

2. निम्नलिखित में से किसी एक अवतरण की सप्रसंग व्याख्या करें :

1. "सच हैं जबतक मनुष्य बोलता नहीं, तब तक उसका गुण दोष प्रकट नही होता"

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति बालकृष्ण भट्ट रचित बातचीत शीर्षत पाठ से लिया गया है, जिसमें लेखक ने बातचीत के महत्त्व को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। भाषा या अभिव्यक्ति के आधार पर ही व्यक्ति के व्यक्तित्व या गुण-दोष की पहचान होती है। बोलने पर ही व्यक्ति की अच्छाई या बुराई का पता चल पाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि, सच हैं जबतक मनुष्य बोलता नहीं, तब तक उसका गुण दोष प्रकट नही होता।

(ii) "जाड़ा क्या है, मौत है और निमोनिया से मरनेवालों को मुरब्बे नहीं मिला करते ।"

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति चंद्रधर शर्मा गुलेरी रचित उसने कहा था शीर्षत पाठ से लिया गया है। वजीरा सिंह के इस कथन का आशय है की वहां युद्ध के मैदान में अत्यधिक ठंडा पड़ रही है जिसके कारण ऐसा लगता है कि मानो उसकी जान ही निकल जाएगी । वजीरा सिंह लहना सिंह से कहता है कि रात भर तुम अपने दोनों कंबल बोधा

bsebcareer.com

सिंह को उढ़ाते हो और आपने सिगड़ी के सहारे गुजर करते हो । उसके पहरे पर खुद जाकर पहरा दे आते हो । अपने सूखे लकड़ी के तख्तों पर उसे सुलाते हो और आपने कीचड़ में पड़े रहते हो । कहीं तुम न माँदे पड़ जाना । और तब वजीरा सिंह कहता है "जाड़ा क्या है, मौत है और 'निमोनिया' से मरनेवालों को मुरब्बे नहीं मिला करते ।" मतलब कि इस ठंड की स्थिति में इतने लोगो को निमोनिया हो रहा है उन्हें मरने के लिए स्थान भी नही मिल रहा है ।

(iii) "जो रस नंद-जसोदा विलसत, सो नहिं तिहूँ भुवनियाँ ।

भोजन करि नंद अचमन लीन्हौ, माँगत सूर जुठनियाँ ।।"

उत्तर - प्रस्तुत पंक्ति हमारे पाठ्यपुस्तक दिगंत भाग 2 के सूरदास के पद कविता से लिया गया है। यह कविता सुरसागर से संकलित है जिसमे सूरदास जी मातृ - पितृ स्नेह का भाव प्रदर्शित कर रहे हैं । श्री कृष्ण नंद की गोद में बैठकर भोजन कर रहे है ।इस दिव्य क्षण का जो आनंद नंद और यशोदा को मिल रहा है यह तीनों लोको मे किसी को प्राप्त नहीं हो सकता ।भोजन करने के बाद नंद और श्री कृष्ण कुल्ला करते है और सूरदास उनका जूठन मांग रहे है ।

(iv) "कबहुँक अंब अवसर पाइ ।

मोरिओ सुधि घाइबी कछु करुन-कथा चलाइ ।।"

उत्तर - प्रस्तुत पंक्तियाँ विनय पत्रिका के सीता स्तुति खंड से ली गई है जिसमे महाकवि तुलसीदास सीता को माँ कहकर संबोधित करते हुए कहते है कि हे माँ कभी उचित अवसर पा के आप प्रभु से कोई कारुणिक प्रसंग छेड़ कर मेरी भी याद प्रभु को दिला देना ।

---

3. विद्यालय में प्रथम स्थान से उत्तीर्ण होने पर अपने छोटे भाई को एक बधाई-पत्र लिखें ।

उत्तर -

पटना

25 जून 2025

प्रिय छोटे भाई रवि,

स्नेहपूर्वक नमस्कार।

आज ही तुम्हारे विद्यालय से समाचार मिला कि तुमने अपनी 12वीं कक्षा में पुरे बिहार में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। यह जानकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई और हृदय गर्व से भर उठा। मेरी तरफ़ से तुम्हें इस शानदार उपलब्धि के लिए ढेर सारी बधाइयाँ! तुम्हारी मेहनत, लगन और नियमित पढ़ाई का यह फल तुम्हें मिला है। स्कूल के साथ साथ तुम बिहार के नंबर 1 संसथान एजुकेशन बाबा से तुम्हारी तैयारी का ये सब परिणाम है। तुमने न सिर्फ़ अपने माता-पिता और गुरुजनों का नाम रोशन किया है, बल्कि अपने बड़े भाई का सिर भी गर्व से ऊँचा कर दिया है। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम आगे भी इसी तरह परिश्रम करते रहोगे और जीवन में और भी ऊँचाइयों को प्राप्त करोगे। पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद और अच्छे आचरण पर भी ध्यान देते रहना। फिर मिलेंगे, तब तुम्हें एक अच्छा-सा उपहार दूँगा।

bsebcareer.com

पुनः बहुत-बहुत बधाई और ढेर सारा प्यार।

तुम्हारा बड़ा भाई

आदित्य झा

---

4. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दें :

(i) कविता में तुक का क्या महत्त्व है ?

उत्तर- तुक से तात्पर्य होता है समान वर्ण अथवा समान ध्वनि का अन्त में प्रयोग। यथा- कबीर पद में 'गाए' और 'दिखाए' तथा 'साखी-भाषी' एवं 'भनी दर्शनी'। ये तुक काव्य में सरसता समाहित कर देता है, गीति तत्व को उभार देता है। लयात्मकता भी प्रखर हो जाती है और काव्य सुनने में या पढ़ने में आनन्द देता है।

कबीर के पदों में तुकों की महत्ता हम दिखा ही चुके हैं। सूर के पद में भी यह विशेषता पायी जाती है 'भारी-धारी' दोनों तुक ही हैं। उसी प्रकार अन्तिम दो पंक्तियों में 'धेरै' 'सरै' भी तुक ही है जिनके प्रभाव से काव्य में सरसता समाहित हो गयी है।

(ii) भक्तकवि तुलसीदास को किस वस्तु की भूख है ?

उत्तर- तुलसी की भूख बड़ी प्रबल है वह है भक्ति-रूपी अमृत के समान उत्तम भोजन की, अतः तुलसी यही प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! अपने चरणों में स्थान देकर मुझे प्रबल शक्ति प्रदान करने की कृपा करें ताकि कलिकाल के प्रभाव से रक्षा हो सके।

(iii) सूरदास रचित पद में गायें किस ओर दौड़ पड़ीं ?

उत्तर - भोर हो गयी है, दुलार भरे कोमल मधुर स्वर में सोए हुए बालक कृष्ण को भोर होने का संकेत देते हुए जगाया जा रहा है। प्रथम पद में भोर होने के संकेत दिए गए हैं- कमल के फूल खिल उठे है, पक्षीगण शोर मचा रहे हैं, गायें अपनी गौशालाओं से अपने-अपने बछड़ों की ओर दूध पिलाने हेतु दौड़ पड़ी ।

(iv) 'मुहमद यहि कवि जोरि सुनावा ।' - यहाँ कवि जायसी ने 'जोरि' शब्द का प्रयोग किस अर्थ में किया है ?

उत्तर - जोड़ी का अर्थ जोड - जोड़कर है कवि ने जोड़ी का प्रयोग कई कथाओ को जोड़ जोड़कर और कई शब्दों को जोड़- जोड़कर यह कथा लिख रहा हूँ की अर्थ में किया है ।

(v) नाभादास के अनुसार कबीर ने भक्ति को कितना महत्त्व दिया ?

उत्तर - कबीर ने भक्ति को सर्वोपरि माना है। वह कहते है जो व्यक्ति भक्ति विमुख है, उसका सारा धर्म अधर्म ही है, भक्ति-विमुख व्यक्ति धर्म का आचरण कर ही नहीं सकता। उसकी मान्यता है, संसार के अनेक साधन हैं। योग है, व्रत हैं, दान है पर सभी भक्ति के बिना तुच्छ ही हैं, व्यर्थ ही हैं, सर्वोपरि भक्ति ही है, वही महत्वपूर्ण है, ईश्वर प्राप्ति का सबसे आसान साधन है।

bsebcareer.com

(vi) 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' क्या है ?

उत्तर- 'आर्ट ऑफ कनवरसेशन' बातचीत करने की एक कला है जो योरप के लोगों में ज्यादा प्रचलित है। ऐसी चतुराई के साथ इसमें प्रसंग छेड़ जाते हैं कि जिन्हें सुन कर कानों को अत्यन्त सुख मिलता है। सुहृद गोष्ठी इसी का नाम है । सुहृदु गोष्ठी की बातचीत की यह तारीफ है कि बात करनेवालों की लियाकत अथवा पंडिताई का अभिमान या कपट कहीं एक बात में भी प्रकट न हो, वरन् क्रम में रसाभास पैदा करनेवाले शब्दों को बरकते हुए चतुर सयाने अपनी बातचीत को सरस रखते हैं । इस प्रकार आर्ट ऑफ कनवरशेसन मनुष्य के द्वारा आपस में बातचीत करने की उत्तम कला है जिसके द्वारा मनुष्य बातचीत को हमेशा आनंदमय बनाये रखता है।

(vii) 'उसने कहा था' शीर्षक कहानी के पात्रों की एक सूची तैयार करें ।

उत्तर- वैसे तो कहानी में कई पात्र है परन्तु जो मुख्य पात्र है उनकी सूचि निम्नलिखित है - लहना सिंह (जो कहानी का नायक है), सूबेदार, सूबेदारनी, बोधा सिंह (सूबेदार का पुत्र), अतर सिंह (सूबेदारनी की मामा), माहासिंह (सिपाही), वजीरा सिंह (पलटन का विदूषक) आदि ।

(viii) राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?

उत्तर- राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर 1908 को सिमरिया, बेगूसराय, बिहार में हुआ था।

(ix) जयप्रकाश नारायण कम्युनिस्ट पार्टी में क्यों नहीं शामिल हुए ?

उत्तर- जयप्रकाश ने लौटने पर सोचा था कि जो देश गुलाम हैं वहाँ के कम्युनिस्टों को हरगिज वहाँ की आजादी की लड़ाई से अपने को अलग नहीं रखना चाहिए। क्योंकि लड़ाई के नेतृत्व 'बुर्जुआ क्लास' के हाथ में रहता है, पूँजीपतियों के हाथ में होता है। अत: कम्युनिस्टों को अलग नहीं रहना चाहिए। अपने को आइसोलिस्ट नहीं करना चाहिए । जे. पी. स्वतन्त्रता के दीवाने थे, वे आजादी चाहते थे, उनकी उस समय आजादी के लिये संघर्ष काँग्रेस ही कर रही थी अत: उन्होंने उसके साथ स्वतन्त्रता संग्राम लड़ना प्रारम्भ कर दिया।

(x) 'दोहा' छंद से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर- दोहा अर्द्धसम मात्रिक छंद है। दोहे के चार चरण होते हैं। इसके विषम चरणों (प्रथम तथा तृतीय) में 13-13 मात्राएँ और सम चरणों (द्वितीय तथा चतुर्थ) में 11-11 मात्राएँ होती हैं। विषम चरणों के आदि में प्राय: जगण (ISI) टालते हैं, लेकिन इस की आवश्यकता नहीं है। 'बड़ा हुआ तो' पंक्ति का आरम्भ ज-गण से ही होता है। सम चरणों के अंत में एक गुरु और एक लघु मात्रा का होना आवश्यक होता है अर्थात अन्त में लघु होता है।

---

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें :

(i) सूर के काव्य की किन विशेषताओं का उल्लेख कवि नाभादास ने किया है ?

bsebcareer.com

उत्तर - सूर के काव्य की इन विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है। सूर के जो काव्य है वो चमत्कार और अनुप्रास से भरे होते हैं। इनकी भाषा तुकधारी होती है। सूर जो है वो कृष्ण भक्त हैं और कृष्ण की जितनी भी लीलाये हैं, उसे उन्हें अपने काव्य में दर्शाया है। कृष्ण के जन्म, कर्म, लीला, गुण और रूप आदि को ही सुर अपने कविताओं में लिखते हैं। कवि नाभादास के अनुसार जो भी सूर के काव्य को सुनता है, उनकी बुद्धि विमल हो जाती है।

(ii) राम स्वभाव से कैसे हैं, पठित पदों के आधार पर बताइए ।

उत्तर- राम का स्वभाव अति कृपालु है। यह तुलसी द्वारा प्रमाणित भी हो रहा है। जब तुलसी ने भयभीत होकर सन्त समाज से पूछा कि ऐसा कौन है, जो मुझ जैसे उद्यमहीन को भी शरण दे सकेगा, तो सन्तों ने यही उत्तर दिया कि एक कौशलपति महाराज श्रीरामचन्द्र जी हैं जो ऐसे उद्यमहीन व्यक्तियों को भी शरण दे सकते हैं। राम का स्वभाव ही है पतितों पर दया करना और यह सन्तों के कथन से प्रमाणित भी हो उठता है।

(iii) प्रवृत्तिमार्ग और निवृत्तिमार्ग क्या हैं ?

उत्तर - प्रवृत्ति मार्ग का तात्पर्य है, वैसा विचार या वैसा मार्ग जिसपर चलने वाले लोग अपने जीवन में आनंद और सुख चाहते है और वो नारी को आनंद की खान समझता है। और उसके विपरीत निवृत्ति मार्ग से तात्पर्य है, वैसा विचार या वैसा मार्ग जिसपर चलने वाले लोग अपने जीवन मे आनंद और सुख नहीं चाहते हैं, वे लोग नारी को अपने जीवन से निकाल दिया या त्याग दिया।

(iv) "लहना सिंह का दायित्व बोध और उसकी बुद्धि दोनों ही स्पृहणीय हैं।" इस कथन की पुष्टि करें ।

उत्तर- ये सत्य है की ‘ लहना सिंह ‘ का दायित्व बोध और उसकी बुद्धि दोनों ही स्पृहणीय है । लहना सिंह ने जिस तरह अपना दायित्व निभाया , वो सच में काबिले तारीफ है क्योकि सुबेदारिनी ने अपना आँचल पसारकर अपने पति और बेटे की जान बचाने की भीख मांगी थी लहना से और बहादुर तथा वीर लहना ने अपनी जान का परवाह न करते हुए उन दोनों की जान बचाई थी । इतना ही नही लहना ने ‘ जमादार पद का दायित्व भी बड़ी बखूबी से निभाया था । लहना सिंह की बुद्धिमानी भी तारीफ़ करने योग्य है क्योकि नकली रूप में आये लपटन साहब ने सोचा कि मै लहना के फ़ौज में शामिल होकर लहना की फ़ौज को ही बम से उड़ा दू लेकिन लहना की चालाकी और बुद्धिमानी ने लपटन साहब को दबोच लिया । इस प्रकार से बहुत बुद्धिमानी से ये जंग जीता था ।

(v) संघर्ष समितियों से जयप्रकाश नारायण की क्या अपेक्षाएँ हैं ?

उत्तर- जब चुनाव आये, संघर्ष समितियाँ मिलकर, आम राय से अपना उम्मीदवार खड़ा करें अथवा जो उम्मीदवार खड़े किये जायें इनमें से किसी को मान्य करें। यदि इन समितियों के बीच आम राय नहीं बनती, तब कोई ऐसा रास्ता खोजा जायेगा जिसमें आपस में फूट के बिना समितियाँ अपना उम्मीदवार खड़ा कर सकेंगी। एक उम्मीदवार को अपनी मान्यता दे सकेंगी। वे चाहते थे कि चुनाव में जनता का एक बहुत बड़ा पार्ट होगा यानी जनता और छात्रों में संघर्ष समितियों के उम्मीदवार के चयन में अपना महत्वपूर्ण रोल अदा करेगा। साथ ही विजयी प्रत्याशी की गतिविधियों पर समितियाँ कड़ी निगाह फैलायेंगी। यदि उस क्षेत्र का प्रतिनिधि गलत रास्ता पकड़ता है तो उसको त्यागपत्र देने हेतु बाध्य करेंगी। उनका काम मात्र शासन से संघर्ष करना नहीं हो सकता बल्कि उनका काम

bsebcareer.com

तो समाज के हर अन्याय और अनीति के विरुद्ध संघर्ष करना होगा। इस प्रकार उनके सामने बराबर संघर्ष बना रहेगा। गाँव में छोटे अफसरों या कर्मचारियों की चाहे वे पुलिस के ही हों घूसखोरी चलती है। समितियों का संघर्ष उनके खिलाफ जारी रहेगा। साथ ही जिन बड़े किसानों ने बेनामी या फर्जी बन्दोबस्तियाँ की हैं, उनका भी विरोध होना चाहिए, दुरस्त करने हेतु संघर्ष भी करेंगे। गाँव में तरह-तरह के अन्याय होते हैं, ये समितियाँ उन अन्यायों को भी रोकेंगी। ये निर्दलीय संघर्ष समितियाँ स्थाई रूप से कायम रहेंगी और मात्र लोकतन्त्र हेतु ही नहीं बल्कि सामाजिक आर्थिक नैतिक बल्कि क्रान्ति के लिये एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य करेंगी।

---

6. निम्नलिखित अवतरण का संक्षेपण कीजिए :

दुःख का एक बहुत बड़ा कारण अपने-आप में डूबे रहना है। हमेशा अपने विषय में सोचते रहना हम यों करते, तो यों होते, वकालत पास करके मिट्टी खराब की। इससे कहीं अच्छा होता कि नौकरी कर ली होती । अगर नौकरी है तो पछतावा है कि वकालत क्यों नहीं की। लड़के नहीं हैं, तो फिक्र है कि लड़के कब होंगे। लड़के हैं तो रो रहे हैं कि ये क्यों पैदा हुए। ये कच्चे-बच्चे न होते, तो कितने आराम से जिंदगी कटती । बहुतेरे ऐसे हैं, जो अपने वैवाहिक जीवन से असंतुष्ट हैं।

उत्तर-

शीर्षक: आत्मकेंद्रिता ही दुःख का कारण

हर समय अपने बारे में सोचते रहना ही दुःख का मूल कारण है। व्यक्ति अपने फैसलों से संतुष्ट नहीं होता और हर स्थिति में कमी महसूस करता है। यही आत्मकेंद्रिता उसे हमेशा दुखी बनाए रखती है।

(मूल उद्धाहरण में शब्द संख्या - 90 संक्षेपण में शब्द संख्या - 36)

bsebcareer.com
Study Centre